IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

निराला की भावात्मक अभिव्यक्ति : सरोज स्मृति

प्रियंका
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग
श्री भगवान महावीर पी0 जी0 कॉलेजपावानगर,फाजिलनगर,कुशीनगर,सम्बद्ध
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्याल गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आधुनिक काल के छायावादी कवियों में प्रमुख कवि के रूप में विराजमान है | इनकी **सरोज स्मृति शोक गीत** कविता है। जिसे निराला जी ने अपनी पुत्री सरोज की स्मृति पर लिखा है। शोक गीत तो पहले पश्चात विद्वानों द्वारा विदेशों में लिखे जाते थे लेकिन हिंदी साहित्य में शोक गीत लिखने का श्रेय सूर्यकांत त्रिपाठी जी 'निराला ' को जाता है। जब हम भावों की बात करते हैं तो देखते है कि हिंदी गीतिकाव्य का आधारशिला ही भावात्मकता है क्योंकि कोई भी गीत बिना भाव के नहीं लिखी जाती है। जैसा कि निराला ने अपने काव्य में अनेक गीतों का सृजन किया है, उसी में उनकी एक शोक गीत रचना सरोज स्मृति भी है। इस कविता के माध्यम से वह अपनी प्रिय पुत्री के जीवन की घटनाओं का स्मरण कर उसे कविता के माध्यम से जीवंत करते हैं। एक पिता द्वारा अपने प्रिय पुत्री के मृत्यु पर लिखा यह प्रथम शोकगीत है। इस संदर्भ में **रामविलास शर्मा जी** कहते हैं कि "**-शोक गीत हिंदी में तो कम लिखे गए। यूरोप की भाषाओं में ऐसा शायद ही कोई प्रभावशाली गीत हो जिसे कवि पिता ने अपनी पुत्री के निधन पर लिखा हो। मित्र या प्रियतमा पर लिखे हुए शोक गीतों में कवियों ने प्राकृतिक सौंदर्य के चित्रण से, पौराणिक गाथाओ की वन देवियों के अवतरण से अपनी अभिव्यंजनाओ को अलंकृत किया है | निराला के इस तरह के अलंकरण का अभाव है|**"[1] इससे स्पष्ट है कि निराला में ऐसी क्षमता है कि वह अपनी पुत्री के जीवन चरित्र को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते है।

बीज शब्द : शोकगीत, पुत्री, संघर्ष,मृत्यु,सुख-दुख, पिता, भाव |

मूल आलेख :

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में गीतिकाव्य का पूर्ण विकास छायावाद में हुआ। इसी गीति - काव्य का एक अभिन्न अंग शोकगीत है। निराला के गीतों में बहुयामी रूप के दर्शन मिलते हैं । जैसे - प्रकृति गीत, प्रार्थनापरक गीत, स्त्री संबंधित गीत,दार्शनिक गीत, आदि आते हैं इसी में एक रूप शोक गीत भी है। निराला ने अपनी पुत्री सरोज के निधन के उन सभी घटनाओं का स्मरण करके उसकी याद में सरोज- स्मृति नामक शोकगीत की रचना किया है। **रामविलास शर्मा** जी कहते हैं कि- " **यूरोप के शोक गीतो में दुख**

और क्षोभ की ऐसी विकट परिणति कहीं नहीं है।किंतु शेक्सपियर के किंग लियर में है..... निराला का क्रूद्ध - विशुद्ध स्वर लियर की करुण व्याकुल पुकार से मिलती-जुलती है। "[2]

अर्थात् निराला और शेक्सपियर के पात्र किंग लियर के करुण पुकार को रामविलास शर्मा जी समान मानते हैं लेकिन यह भी मानते हैं कि पिता और पुत्री के वियोग से उत्पन्न दुख और पीड़ा जैसे गीतों का यूरोप के गीतो में अभाव मिलता है। क्योंकि हिंदी में सर्वप्रथम शोकगीत निराला ने ही लिखा है। निराला की सरोज स्मृति कविता गहरे भावों से भरी है। इसमें भावों के विविध रूप के दर्शन होते हैं। जैसे सुख-दुख, हताश- निराशा की भावना, हास्य - व्यंग्य के भाव आदि कहानी कि तरह आते रहते है । इस संदर्भ में **डॉ. शशि कला पांडे** कहती हैं कि - " **निराला की कविता सरोज स्मृति भी गहरे भावबोध की कविता है। इस पूरी कविता में निराला के जीवन की विविध भाव सुख -दुख, हताशा और निराशा के दर्शन होते हैं। "** [3]

इस कविता में निराला अपनी पुत्री के 18 वर्षों को गीता के 18 अध्याय के रूप में प्रस्तुत किया हैं। यही नहीं उन्नविंशवें वर्ष में पुत्री न केवल अपने पिता के घर से विदा होती है बल्कि वह अपने जीवन से भी विदा हो जाती है। निराला इस कविता के प्रथम चरण में ही इसका वर्णन करते हैं और कहते है की पुत्री सरोज तू जीवन के इस प्रथम चरण में ही उस पार (जीवन के अंतिम चरण में)क्यों उतर गयी?

"उनविंश पर जो प्रथम चरण
तेरा वह जीवन सिंधु तरण
तनये, ली कर दृक पात तरुण
जनक के जन्म की विदा अरुण!
गीते , मेरी , तज रूप नाम
वर लिया अमर शाश्वत विराम,
पूरे कर सुचितर सपर्याय
जीवन के अष्टादशाध्याय। " [4]

निराला इस कविता में अपनी पुत्री के बाल्यावस्था से लेकर मृत्युवावस्था तक का वर्णन किये हैं। इसमें विराग भरे स्वर में नीति , प्रेम, श्रृंगार और हास्य - व्यंग के पुट स्वभावतः कहानी की तरह आते - जाते हैं। जब प्रेम और सौंदर्य की बात आती है तो निराला इस कविता में अपनी पुत्री के जो सौंदर्य का वर्णन किए हैं , वह उत्कृष्ट है भाव पवित्र और प्रबल दिखाई देते हैं। उन्हें अपनी पुत्री के सौंदर्य में स्वर्गीय पत्नी की आभा दिखाई देती है। यही नहीं सरोज के बाल्यावस्था से लेकर तरुणावस्था का बहुत ही मार्मिक और प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करते है।

"धीरे –धीरे फिर बढ़ा चरण

बाल्य की केलियों का प्रांगण

कर पार, कुंज - तारुण्य सुघर

आई, लावण्य - भार थर- थर

काँपा कोमलता पर सस्वर

ज्यों मालकोश नव वीणा पर ;

नैश स्वप्न ज्यों तू मंद-मंद

फूटी उषा- जागरण - छंद " [5]

निराला अपनी पुत्री के मधुर मुस्कान को नए ढंग से प्रस्तुत किया है।उन्हें ऐसा लगता है कि नवीन वीणा पर मालकोश राग छेड़ा हुआ हो। ध्यान देने योग्य बात यह है कि निराला ने इस कविता में केवल सरोज के जीवन का चित्र ही नहीं खींचा है बल्कि अपने आत्म संघर्ष भी दर्शाया है।यह कविता दो जीवन चित्रों को साथ लेकर चलती है । निराला के निराशावाद का कारण इनका आत्मसंघर्ष ही है। यही नहीं,कभी हार ना मानने वाले निराला अपने को पराजित समझते हैं। निराला के जीवनवृत्त के संघर्षों को यदि कोई कविता बहुत समीपता से उद्घाटित करता है तो वह इनकी सरोज स्मृति ही है।

"तब भी मैं इसी तरह समस्त

कवि -जीवन में व्यर्थ ही व्यस्त

लिखता आबाध गति मुक्त छंद,

पर संपादकगण निरानन्द

वापस कर देते पढ़ सत्वर

दे एक -पंक्ति - दो में उत्तर।" [6]

जब इनकी कविता बिना छपे वापस आती तो, यह बहुत हताश और निराश हो जाते थे । एक तरफ तो निराला अपने कार्यक्षेत्र के संघर्षों से दुखी थे तो वहीं दूसरी तरफ अपनी निजी जीवन के संघर्षों से कम दुखी नहीं थे। इन्हें सबसे ज्यादा आत्मग्लानी इस बात की थी कि जो एक पिता का अपनी पुत्री के प्रति कर्तव्य होता है उसका निर्वहन वह ठीक ढंग से नहीं कर पाए और वह अपने आप को बहुत ही निरर्थक असहाय पिता समझते हैं। इसका मुख्य कारण इनकी आर्थिक समस्या है।

"धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे हित न कर सका!

जाना तो अर्थागामोपय,

पर रहा सदा संकुचित - काय

लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर

हारता रहा मैं स्वार्थ - समर।" [7]

जब सरोज छोटी थी तो उसकी माता उसे छोड़ कर चली गई। वह नानी के गोद में खेलते हुए बड़ी हुई और मामा - मामी के प्यार ने ,संस्कारों की शिक्षा दी। जब सरोज बड़ी हुई तब नानी ने उसे पिता निराला के पास सौंप दिया और उसके विवाह के लिए सुयोग्य वर ढूंढने को कहा। जब निराला सुयोग्य वर की तलाश करते है तो वहाँ जाति संबंधित अवधरणा पर करारा व्यंग्य करते हुए नजर आते है

"ये कन्याकुब्ज - कुल कुलांगार

खाकर पत्तल में करे छेद,

इनके कर कन्या , अर्थ खेद,

इस विषय - बेलि में विष ही फल

यह दग्ध मरुस्थल - नहीं सुजल।" [8]

कविता के अंत मे निराला अपने आप को बहुत ही भाग्यहीन समझते है और कहते है कि मेरा तो सम्पूर्ण जीवन कि कहानी ही दुःखमय है ।इसका मुख्य कारण आर्थिक आभाव है |जिसके कारण वह इन अभावों के सैकड़ो तीर से चोट खाते हुए भी , निराला चुपचाप अपनी पुत्री को अपलक खड़े हुए देखते रहे अर्थात् सरोज जब मृत्युशैया पर थी तो निराला आर्थिक आभाव के कारण पुत्री सरोज के लिए कुछ भी न कर सके। जिसके कारण वह अपने आप को पराजित समझते है और अपने कवि- कर्म को शाप देते हुए कहते है कि -

"हो इसी कर्म पर वज्रपात

यदि धर्म , रहे नत सदा माथ

इस पथ पर , मेरे कार्य सकल

हों भ्रष्ट शीत के - से शतदल!" [9]

अंत मे निराला कहते है कि हे पुत्री तू मेरी भाग्यहीन की एक मात्र सहारा थी। मेरा तो सम्पूर्ण जीवन क़ी कथा ही दुःखमय रही। लेकिन मैं अपने विगत जन्म के शुभकर्मों के स्नेहांजलि को तुम्हें अर्पित करता हूँ अर्थात् कवि अपने शुभकर्मों के फल से अपनी पुत्री का तर्पण करते है।

" कन्ये, गत कर्मों का अर्पण

कर , करता मैं तेरा तर्पण ! "[10]

निष्कर्ष : इस प्रकार हम कह सकते है कि सरोज - स्मृति कविता में एक पिता का अपनी पुत्री के प्रति जो भाव है, उसकी अभिव्यक्ति कल्पना का सहारा लेते हुए उसे यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। हिंदी साहित्य में ऐसी मार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति जिसमे पिता और पुत्री के समर्पित भाव को दिखाया गया है, वह निराला जी की एकमात्र पहली शोक गीत रचना सरोज - स्मृति ही है। निराला इस कविता में दोहरे जीवन को जीते नजर आते है। पहला इनका कवि - कर्म दूसरा इनका निजी जीवन। जिसमें कवि के संघर्ष, निराशा और आत्मग्लानि के भाव उजागर होते दिखते है। निराला अपनी पुत्री सरोज की मृत्यु के उपरांत न केवल अपने शुभ कर्मों के द्वारा , बल्कि सरोज- स्मृति कविता के माध्यम से भी उसका तर्पण करते हैं। सरोज अपने ननिहाल में पली बड़ी हुई बाद में निराला ने संसार की सारी रीति - रिवाज को तोड़ अपनी पुत्री का विवाह बहुत ही साधे ढंग से किया लेकिन नियति के भाग में कुछ और ही लिखा था। विवाह के कुछ दिनों बाद ही सरोज की असामयिक मृत्यु से निराला अंदर से टूट जाते हैं। पत्नी मनोहरा की मृत्यु के उपरांत यह दूसरा बहुत बड़ा आघात इन्हें पहुंचता है। सरोज - स्मृति के संदर्भ में **रामस्वरूप चतुर्वेदी** जी कहते है कि -" **वह कवि की इकलौती बेटी की मृत्यु पर लिखा गया शोक -काव्य है , हिंदी में तो अपने ढंग का अकेला ही। मझोले आकार की इस कविता में रचनाकार ने विविध मनः स्थितियों को अंकित किया है। नीति, श्रृंगार और अंत में विराग - भाव के बीच - बीच में करुणा की अंतर्वर्ती धारा बराबर प्रभावित होती रहती है।** "[11]

हिंदी साहित्य में विभिन्न कवियों ने कभी सुंदर युवती का, अप्सरा का, प्रेमिका के सौंदर्य का आदि वर्णन किये है लेकिन छायावाद में निराला ही ऐसे कवि है जो नारी के उद्वात स्वरूप का वर्णन अपने काव्य में किये है। चाहे वह पत्थर तोड़ती हुई युवती हो या भारत की विधवा। ऐसे ही इन्होंने अपनी पुत्री का वर्णन उद्वात के धरातल पर किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1- सम्पादक : रामविलास शर्मा, राग विराग - सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , 2012 , पृष्ठ संख्या -28

2- वही , पृष्ठ संख्या -29

3- संयोजन - सम्पादक : शशिकला त्रिपाठी , छायावाद एक पुनर्विचार , सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन , नई दिल्ली , 2021, पृष्ठ संख्या- 204

4- संपादक : रामविलास शर्मा, राग विराग - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद , 2012 , पृष्ठ संख्या – 79

5- वही , पृष्ठ संख्या - 85

6- वही , पृष्ठ संख्या - 83

7- वही , पृष्ठ संख्या - 80

8- वही , पृष्ठ संख्या - 88

9- वही , पृष्ठ संख्या - 91

10 - वही , पृष्ठ संख्या - 91

11- रामस्वरूप चतुर्वेदी , हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास , लोक भारती प्रकाशन , प्रयागराज ,2022 , पृष्ठ संख्या -125

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation